PART-**1**

रोमन भूगोलवेत्ता- प्लिनी

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

(3) प्लिनी (Pliny)

प्लिनी (27-79 ई०) का जन्म उत्तरी इटली के विकोना नामक स्थान पर हुआ था। प्लिनी ने कुशल प्रशासनिक अधिकारी के रूप में नीरो तथा टाइटस के शासनकाल में कई उच्च पदों पर कार्य किया था। प्लिनी एक भूगोलवेत्ता के साथ-साथ महान गणितज्ञ और प्रशासक भी थे। प्लिनी ने पृथ्वी के पिण्डाकार स्वरूप को स्वीकार किया था और बताया था कि पृथ्वी अपने अक्ष (घुरी) पर झुकी हुई है जिसके कारण ऋतु परिवर्तन होता है। उन्होंने विभिन्न भागों के भौगोलिक वर्णन के साथ ही वहाँ की आकाशीय (वायुमंडलीय) दशाओं का भी उल्लेख किया है। इनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'प्राकृतिक इतिहास' (Historia Naturalis) है जिसमें 37 खण्ड हैं। इसके अतिरिक्त तीन अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं-जर्मनी में युद्धों का इतिहास, स्वकालीन इतिहास और मौसम विज्ञान।

1. **प्राकृतिक इतिहास (Historia Naturalis)-** 37 खण्डों में प्रकाशित इस पुस्तक के प्रारंभिक दो खण्डों में आकाशीय पिण्डों और पृथ्वी के आकार, स्वरूप, धरातल और मौसम आदि का वर्णन है। तीसरे से लेकर छठें खण्ड तक विभिन्न प्रदेशों का भौगोलिक विवरण दिया गया है। सातवें से ग्यारहवें खण्ड तक मानवशास्त्र और जीव विज्ञान सम्बन्धी विवरण मिलता है। शेष खण्डों में वनस्पति विज्ञान सम्बन्धी तथ्यों का विवरण दिया गया है।
2. **जर्मनी में युद्धों का इतिहास (History of Wars in Germany)-** बीस खण्डों में प्रकाशित इस पुस्तक में जर्मनी के युद्धों का ऐतिहासिक विवरण दिया गया है।
3. **स्वकालीन इतिहास (History of His Own Times)-** साहित्यिक ढंग से लिखा गया यह ग्रंथ इकीस खण्डों में प्रकाशित हुआ था।
4. **मौसम विज्ञान (Meteorology)-** प्राकृतिक इतिहास के बाद यह प्लिनी का दूसरा महत्वपूर्ण भौगोलिक ग्रंथ है जिसमें भौतिक भूगोल और जलवायु विज्ञान के तथ्यों का विवरण दिया गया है। इसमें विभिन्न मौसमी दशाओं की उत्पत्ति, सूर्य ग्रहणऔर चन्द्र ग्रहण, ज्वालामुखी प्रस्फोट, भूकम्प आदि का तथ्यपूर्ण वर्णन किया गया है।